R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 24 | अंक 11 | रविवार, इलाहाबाद, 28 जुलाई 2024 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

कल्पना के उस सुकोमल ,
पल को जीना चाहिए ।
व्याधियां कितनी भी आएं ,
मुस्कुराना चाहिए ।
हर कदम पर राग का ,
सुंदर पहर भी आएगा ।
जो किया है कर्म बंधु ,
वही फल तो पाएगा ।

इस बार महिला का गोष्ठी विशेषांक के साथ पुरुष काव्य गोष्ठी में पढ़ी गई कुछ कविताएं भी शामिल

है । आगे से जब तक पुरुष काव्य गोष्ठी में पढ़ी गई रचनाओं का आदान-प्रदान दुरुस्त नहीं होगा, तब तक महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक में यह व्यवस्था रहेगी। महिला रचनाकारों की रचनाएं निरंतर अपनी पुख्ता जमीन तलाश रही । भले ही कुछ लोगों को रचनाकारों की विशेष रचनाएं, पुरानी परिपाटी की लगें । उसका हमें परवाह नहीं करना है, आखिर जीवन भी तो एक धुरी है जो निरंतर चलायमान है, उसी प्रकार काव्य संसार भी है जहां तमाम धाराओं की कविताओं का अवलोकन होता रहता है । जून माह की काव्य गोष्ठी में पढ़ी गई कुछ रचनाओं की
बानगी देखिये

फ़िर तेरी मेहरबानी ढूँढती हूँ।
वो भूली सी कहानी ढूँढती हूँ।
ज़ेहन में जो बसी थी मेरी ज़ानिब,
मुहब्बत वो पुरानी ढूँढती हूँ।

दूसरी बानगी

कोई जिंदगी इस जहाँ में आती कहाँ से है?
रहती कहाँ है?
जीती कहाँ है और जाती कहाँ है?

तीसरी बानगी

मैं गंगा हूं मैं गंगा हूं
मानव कर्मों पर शर्मिन्दा हूं।
कल -कल निर्मल , अविरल , निश्चल
ऐसी प्रकृति की सारंगा हूं।

इस बार महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक में **पुरस्कृत रचना बिजनौर की ऋतु बाला रस्तोगी** की है । इसे देखिए, समझिए और बताइए, यह अंक आपको कैसा , लगा प्रक्रिया जरूर दें ।
अंत में -

कहना होता है जो कुछ भी ,
कह जाता हूं मेरे भाई ।

-उमेश श्रीवास्तव

पुरस्कृत रचना

स्वाभिमानी आँसुओ का सार...

स्वाभिमानी आँसुओ का सार पाना ही कठिन है।
मोह बंधन काट दे जो, धार पाना ही कठिन है।
जान देने जा रहे उस मित्र का जीवन बचा लें,
मुश्किलों में मित्र ऐसे चार पाना ही कठिन है।
भावनाओं के भँवर में, डूबना आसान होता ,
किन्तु बचकर उस भँवर से,पार पाना ही कठिन है।
हार कर सर्वस्व अपना, हाथ खाली हो चुके हों,
किन्तु अपनी एषणा को मार पाना ही कठिन है।
जीत की आशा बिखरती, जा रहे हों वार खाली,
किन्तु घायल आत्मा का हार पाना ही कठिन है।

-ऋतुबाला रस्तोगी

कविताएं

चंदा मामा

मुन्ना बोला मम्मी से मुझको तुम बहलाओ ना।
चंदा मामा दूर के , मुझको तुम दिखलाओ ना।

पूछे मम्मी मुन्ने से क्यूं इतना मुझे सताते हो।
चंदा मामा कल आयेंगे,
अब मान नहीं क्यूं जाते हो।
मेरा वादा पक्का है,
अब मुझको और सताओ ना।
मुन्ना बोला मम्मी से ।।

परियों वाले सपने देखो, और तारों की सैर करो।
सुबह सबेरे जल्दी उठना, ना सोने में देर करो।
लोरी सुनके सो जाओ,
अब निंदियां दूर भगाओ ना।
मुन्ना बोला मम्मी से,...।।

चंदा मामा जब आयेंगे,तुमको मैं मिलवाऊंगी।
खोल के खिडकी कमरे की, अंदर उन्हें बुलाऊंगी।
मन भर कर तुम बातें करना, अब सोने मे देर ल
गाओ ना।
मुन्ना बोला मम्मी से...।।

चंदा मामा कितने सुंदर ,
मैं उनसे हाथ मिलाऊंगा।
चुन्नू मुन्नु और राजु को, उनकी बातें बतलाऊंगा।
मुझे सुलाकर प्यारी मम्मी,
तुम भी तो सो जाओ ना।
मुन्ना बोला मम्मी से...।।

डॉक्टर पूनम चौहान
बिजनौर

पितृदिवस

चलो पिता का एक दिन मना लें,
पितृ दिवस पर कुछ गुनगुना लें ,
यूं तो भारत में जनक का अत्यंत महत्व है,
ये सच है पिता नहीं तो कुछ नहीं,,
उसकी बरगद जैसी शीतल छाया,
आसमान रुपी छत,
कठिनाईयों को पास न आने देने की प्रतिबद्धता,
बच्चों का जीवन सरल -सुगम बनाता,
पिता धूप है तो छाया भी,
पिता आकाश है तो उदधि भी
सेतु भी वही,पुल भी वही
रात भी वही दिन भी वही,
आत्मज और आत्मजा को,
आत्मा प्रदान करने वाला
केवल एक दिन का आनंद ही नहीं
प्रति दिन का होना चाहिए
आज की पीढ़ी को संस्कारवान बनाने के लिए,
पिता को अपने पिता का भी
सम्मान करना चाहिए।

मंजु गुप्ता
बिजनौर।

कवि

अन्तर्द्वन्द के उर ज्वाला से
यह कवि मन जब जलता है
लिपट -लिपट कर तपता है
तब जाकर तम छंटता है ।।

स्वागत करता उस जीवन का
जिसमें केवल विष पान किया
करुणा,दया और ममता लेकर
विभिन्न रसों का गुणगान किया
शब्दों में वो भावना गुनता है ।

सच कहता है भरमाता है
सूनी रात या महफ़िल चुनता है
खेत-खलिहान महलों में घूमा
पत्तों और फूलों संग महकता है
खुशी में नदियों संग बहता है ।

बिखर गए हर स्वप्न नयन के
छोड़ चलें सब रिश्ते चयन के
जीवन -मरण के प्रश्नों को
जब कोटि हृदय चटकाता है
तब कवि हृदय से उत्तर रखता है ।

सुनीता जौहरी
वाराणसी

गज़ल

फ़िर तेरी मेहरबानी ढूँढती हूँ।
वो भूली सी कहानी ढूँढती हूँ।

ज़ेहन में जो बसी थी मेरी ज़ानिब,
मुहब्बत वो पुरानी ढूँढती हूँ।

तेरी आने से जो आती थी रौनक़
वही फ़िर से जवानी ढूँढती हूँ।

वो हौले से मिरे नज़दीक आकर
चूमते थे पेशानी ढूँढती हूँ।

किया था इश्क़ का सौदा तुम्हीं से
वो अफ़साना नूरानी ढूँढती हूँ।

जो कुछ लम्हात गुज़रे थे तिरे संग
वक़्त फ़िर वो रूमानी ढूँढती हूँ।

लफ़्ज़-ओ-अहसास खो गए अब तो
ग़ज़ल में क्यों रवानी ढूँढती हूँ।

डॉ सुषमा त्रिपाठी

योग दिवस

योग सभी नित -नित करिए,
जिससे हम स्वस्थ रहते हैं ।
सुंदर काया योग से रहती ,
इसीलिए सब योग करते हैं।।

योग से मन स्वच्छ रहता,
जो नित सभी को करना है।
योग से मिले मन को शांति,
मन को योग से प्रसन्न करना है।

हर मानव को समझाना है,
योग करो और रहो निरोग।
दूर भगाओ आलस को तुम,
और बढ़ाओ अपना मनोयोग।।

योग सभी की पूजा और ध्यान,
ऋषियों के तप से हमको मिली!
योग से मानव अपने रोग भगाए,
जीवन की साँसें योग से मिली !

सुषमा सिंह उर्मि

योग व प्राणायाम

स्वस्थ निरोगी काया मिलती,
मुख पर आभा आती।
नित्य योग प्राणायामों से,
बीमारी है जाती।।

मर्कट मंडूक आसनों से,
अग्न्याशय का शोधन।
रोग मिटें मधुमेह पीलिया,
यही वैद्य उद्बोधन।।
आयुर्वेद औषधि से सारी,
आधि व्याधि भय खाती।
नित्य योग प्राणायामों से,
बीमारी है जाती।।

वङ्कासन धनुरासन करके, मेरुदंड बल पाए।
सुप्त पवनमुक्तासन करते, उदर सही हो जाए।।
नख-शिख सब सुन्दरता पाता,
छवि सबको है भाती।
नित्य योग प्राणायामों से, बीमारी है जाती।।

शाकाहारी भोजन मानो, सदा रहे हितकारी।
साथ प्रकृति के जीना सीखो,
सुखी रहें नर नारी।।
केशराशि लहराती सर्पिल, सुन्दर आभा पाती।
नित्य योग प्राणायामों से, बीमारी है जाती।।

कविताएं

नव संकल्पों को लेकर जग,
जन जागृति लाएगा।
विश्व पटल पर हो योगासन ,
यह अब दिखलाएगा।।
कुशल निरोगी जब घरवाले,
हर्षित दादा नाती।
नित्य योग प्राणायामों से, बीमारी है जाती।।

सीमा वर्णिका

मन की व्यथा

आता है जब मायके से फोन,
पूछती है मां मेरी ,आई नहीं बहुत दिन से
क्या याद हमारी आती नही,
फिर उसकी आंखों से ,
अश्कों की धार बह जाती है,
कैसे कहूं, मां,
यहीं तो एक बेटी हार जाती है
पूछे पिता मेरे कोई दिक्कत तो नहीं कोई
परेशानी तो नहीं ? मत
परेशान होना अभीतो मैं हूं,
उनकी यह छवि
मेरे जीवन का सार हो जाती है,
कैसे कहूं पापा यहीं तो
एक बेटी हार जाती है ।
शिकायत करते भैया भाभी
बड़ी बिजी हो गई हो फोन भी नहीं करती,
करती हो आने का वादा,
तोड़कर वादा तुम्हारी खुद की बात
बेकार हो जाती है,
कैसे बताऊं भैया,
एक बेटी यहीं तो हार जाती है ।
नाराज बैठी बहन बोल देती है,
याद तुम्हें तो आती नही,
बच्चों को भी मौसी से मिलाती नही,
उससे तो प्यार से अक्सर
तकरार हो जाती है,
कैसे बताऊं बहना ,
यही तो एक बेटी हार जाती है ।

ज्येष्ठ की गर्मी

ज्येष्ठ की भीषण गर्मी में ,
चिलचिलाती धूप में ,
सूरज ने यूं तपिश बढ़ाई,
देखो हाय जालिम गर्मी आई।
टप-टप बूंद बनकर स्वेदों ने है धार बहाई ,
बत्ती गुल हो जाने पर सबने मिल
हाहाकार मचाई,
शीतल-शीतल पेय से मिलकर
गर्मी की है तपन बुझाई।
देखो हाय जालिम गर्मी आई .....
सूखा पड़ा नदियों झरनों में
पंछी भी प्यासा भटक रहा ,
धूप दुपहरिया की देख
सबका मन भी घबरा रहा ,
कुल्फी ,आइसक्रीम ने भी क्षण भर की ही
अगन बुझाई ।
हाय यह जालिम गर्मी आई.....
सूरज भगवन रहम दिखा दो, नभ तुम थोड़ा
जल बरसा दो।
वृक्ष अब शीतल पवन बहा दो ,थोड़ा मन को
करार दिला दो ,
बाकी सब सह लेंगे भाई
हाय क्यों जालिम गर्मी आई।

श्रद्धा श्रीवास्तव

ग़ज़ल

तारे गिनता है रात भर कोई!
रखता अपनी नहीं खबर कोई!!

तुझको एक रोज देखने की जिद!
करता हर रोज है सबर कोई!!

दुनिया कहती है लौट के आ जा!
तुझमें गुम है,है बेखबर कोई!!

तेरी उसको नजर है ऐसी लगी!
अब है लगती नहीं नजर कोई!!

एक तेरी चाह में सुकूं से है!
दूजी हसरत न उम्र भर कोई!!

हाल उसका मैं क्या बताऊं तुझे!
फिरता रहता है दरबदर कोई!!

तेरा दीदार हो तो चैन आए!
सदियों से कर रहा सफर कोई!!

तू जो मिल जाए उसे झूम उठे!
तेरी तलाश में हमसफ़र कोई!!

सौम्या शर्मा

ज़िंदगी

कोई जिंदगी इस जहाँ में आती कहाँ से है?
रहती कहाँ है?
जीती कहाँ है और जाती कहाँ है?

जिस दिन हम खोज लेंगे
सही जवाब इसका,
समझ जायेंगे कि ये जिंदगी ही तो वह
जहाँ है।

उलटते पलटते रहे पन्ने डायरी के भी हम ,
कहाँ से चले थे और अभी जाना कहाँ है।

रेल की पटरियों पर सरपट भागती रेल सी
ये जिंदगी,
नहीं मालूम उसकी ही तरह मंजिल कहाँ है?

देखा दर-ब-दर दुनिया जहाँ को पल भर में,
फिर भी नही जानते कि
रुकेगी ये जिन्दगी कहाँ है?

खोजते रहेंगे उम्र भर जवाब इन सवालों के,
मिलेंगे किस भी किताब में
जवाब वह कहाँ है?

रेखा श्रीवास्तव

इन्हे पाँव की धूल न समझो

इन्हे पाँव की धूल न समझो,
ये माथें का चंदन हैं ।
कड़ी धूप मजदूरी करते,
उनका नित अभिनंदन हैं ।।

बिजली के तारों से खेले ,
घर-घर कर रहे उजाला।
बिना तेल के बुझे दीप हैं,
गहन अँधेरा घर काला।।
नयन नीर को भरकर अपने,
सुनना हमको क्रंदन हैं।
इन्हे पाँव की धूल न समझो,
ये माथें का चंदन हैं ।।

बड़ी बड़ी इमारतें गढ़ते,पकते ईटें भट्टी में।
मिलता बस दो वक्त निवाला ,
रहते झोपड पट्टी में।।
इनकी पीड़ा हम भी समझे,
यही गरीबी बंधन है।
इन्हे पाँव की धूल न समझो,
ये माथें का चंदन हैं ।।

फटे पुराने कपड़े पहने,
पोछा बर्तन जो करते।
रोटी की कीमत वो समझे,
कब तूफानों से डरते।।
खून पसीना तृप्ति करे मन,
हिय में देखो स्पंदन है।
इन्हे पाँव की धूल न समझो,
ये माथें का चंदन हैं।।

पीडा को महसूस करें तो,
पत्थर हिय भी मोम बनें।
जंगल में मंगल हो जाये,
तम के बादल हटे घने।।
दया भाव दो शब्द मिले तो,
उनका जीवन कंचन है।
इन्हे पाँव की धूल न समझो,
ये माथें का चंदन हैं।।

रचना सक्सेना

गर्मी से बेहाल जीवन

गर्मी से बेहाल जीवन हो रहा,
कोई ए0 सी0 कक्ष में बस सो रहा।
भानु तेवर देख मन चिन्तित बहुत,
तपिश पर लिखते ये दिल घबरा रहा।

इक नजर उस ओर भी तो डालिए,
जिस जगह छत कोई भी दिखती नहीं।
कैसे तप-तप कर ये बच्चे रो रहें,
कटती छाँव बस उधर लखती रही।।

हे! दिवाकर क्या कहूँ,निर्दोष तुम हो,
इस मनुज ने स्वार्थ हित ये सब किया।
जंगलों पर्वत को इसने खूब काटा,
देखो अपना दोष तुम पर मढ़ दिया ।।

अस्त-व्यस्त हुई दिवस की शैलियाँ हैं,
नीम,पीपल की जगह अब बेलियाँ हैं।
पेड़ की छाया है दिखती दूर ही अब,
घर के आँगन में भी सूखी डालियाँ हैं।।

सब यही कहते ये मौसम क्रूर है ,
अरे क्यों ये भूलें हम नियम से दूर हैं।
प्रकृति के सब अंग चोटहिल कर रहें,
फिर भी कहते हम बहुत मजबूर हैं।।

कल को कल-कल कर रही नदियाँ थी जो,
आज सूखी - सी खड़ी वीरान में।
गूँज मधुकर की विटप चहुँओर था।
खो गया मानो कहीं श्मशान में।।

तेज आँधी बह रही ले ताप को,
और बढ़ाती नित्य ये संताप को।
मेघ नभ में आ के देखो जा रहे,
ले लिया हमने ही खुद अभिशाप को।।

आज भी न सँभल पाए तो मनुज,
आग उगलेगी धरा भी रात में।
खोज कितनी भी करो सब व्यर्थ है,
जब नहीं मानव दिखेगा प्रभात में।।

सकल ये विज्ञान भी है कह रहा,
वृक्ष, पर्वत,जल,वनों को सभाँल लो।
सुन्दरम् से भी है सुन्दर ये धरा,
हरित के रोपण से इसको थाम लो।।

डॉ0 (कु0) शशि जायसवाल
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

झूठ से बड़ा कोई सच नहीं

खुद से भी बोला गया झूठ
सच नहीं होता
होता है घातक
फिर भी लोग झूठ ओढ़ते हैं शान से
चादर से पाँव निकालकर
बिछाने को मिले तो
सिलवट भी नहीं आने देते

तरह तरह की डिज़ाइने है झूठ की
बाज़ार में
दुकानें सजी है
बस देखते जाइए

त्वचा से उम्र का पता नहीं चलता
सब से प्रचलित झूठ है
दूसरे के किये काम पर अपना दावा
विगलित झूठ है
रिश्तों में ईमानदारी की दुहाई
सुमेलित झूठ है
मित्रता की परिभाषा में सच्चाई
विचलित झूठ है
वफ़ादारी की नुमाइश करने वाले बहुत है
उनका अपना संक्रमित झूठ है
पत्थर पर नाम टंकवाने का शौक
एक पथराया झूठ है

एक अँधी दीवार है झूठ की
इस दीवार के कान में नहीं हैं
अंधी बहरी है मगर
कहानी अपनी कहने में चूक नहीं करती
सामने वाले से टकराती है
एक टकराहट पर अंधेपन का खताि़ब देती है

कौन कहता था
झूठ बोलना पाप है
आज छूठ पर पूरी की पूरी
आदमीयत की छाप है
इसलिए खुद से भी बोला गया झूठ।
सच होने लगा है

डॉ कल्पना वर्मा
अमेठी

मैं गंगा हूं मैं गंगा हूं

मैं गंगा हूं मैं गंगा हूं
मानव कर्मों पर शर्मिन्दा हूं।
कल -कल निर्मल , अविरल , निश्चल
ऐसी प्रकृति की सारंगा हूं।

हूँ विष्णु प्रिया आकाश की मैं
शिव के सीस विराज रही
भू पे भगीरथ के तप से
त्वरित निश्छल आन पड़ी
देवो के मंत्रो का सार रही
मैं उनकी अलक नंदा हूं
मैं गंगा हूं....
युग -युग से मैं धोय रही
तेरे पापों की काया को
तन उजला कर तू निकल गया
कर कलुषित पावन धारा को
कर दूषित अस्तित्व को मेरे
अब दीप नही मैं पतंगा हूं
मैं गंगा हूं..
कोई हाथ में लेकर वजू करे
कोई बैठ तट गुरू वाणी पढ़े
कोई अर्चन, तर्पण, जाप करे
कोई नृत्य, गान,अजान करे
क्यों बांट रहे हो धर्मो में
समता की मैं संगा हूं
मैं गंगा हूं...।

डॉ. मन्जू प्रकाश

यह जरूरी नहीं

बागों में फूल असंख्य हैं
हर फूल में खुशबू हो यह जरूरी नहीं।
जीवन में कांटे बहुत है हर कांटों संग गुलाब
हो यह जरूरी नहीं ।चलते रास्तों में सड़के
अनेक है हर सड़क मंजिल पर पहुंचा दे यह
जरूरी नहीं। ख्वाहिशों के अनेक अक्स
मन पर छायें है हर ख्वाहिश पूरी हो यह
जरूरी नहीं वेदना तो पीड़ा पहुंचती है हर
पीड़ा में दर्द छुपा हो यह जरूरी नहीं। तुम्हें
पाने की जिद तो मेरी है वह जिद उन्हें भाये
यह जरूरी नहीं। गली-गली में उनके नाम
की चर्चा है उसे नाम से मेरा वास्ता हो यह
जरूरी नहीं ।हम तो अपने में मगरूर रहते हैं
उन्हें भी मेरी फिक्र हो यह जरूरी नहीं

डॉ सविता कुमारी श्रीवास्तव
प्रयागराज

नई परत

जो गुजर जाता है,
वो बिसर ही जाता है।।
समय हो सामान हो या कोई व्यक्ति
एक समय सीमा तक ही होती अभिव्यक्ति

नई यादें बनती जाती हैं
और पुरानी उनके नीचे दब जाती हैं
हाँ कुछ एहसास रह जाते हैं
जो बहुत खास हो वो धीरे धीरे जाते हैं

ज़रूरी भी है
आगे बढ़ने के लिए ज़रूरी भी है
नया करने के लिए ज़रूरी भी है
कभी कभी
किसी और का होने के लिए
ज़रूरी भी है

नये लोग जब होंगे ज़िंदगी में
तो नई यादें बन ही जाती है
उस पुरानी जीर्ण हो रही यादों पर
एक नई परत चढ़ ही जाती है
नई परत चढ़ ही जाती है।।।

ज्योत्स्ना मिश्रा
गोण्डा उ.प्र

मै मुस्कराई थी

न चाहत थी न मंजिल थी,
बस थी एक टूटता तारा।
तुझे देखा तो बनके चाँद,
फिर मै मुस्कराई थी।

कहूं क्या हाल मै दिल का,
ये था बस एक बंजारा।
तुझे देखा तो दिल ही दिल मे,
एक घर बनाई थी।

वो लव पर मुस्कराई थी,
थी सदियो तक जो खामोशी।
थी बाते जो दबी दिल मे,
वो तूफां बनके आई थी।

सूनी-सूनी सी दुनिया थी,
था आकाश सन्नाटा।
तुझे बाहों मे जब पाया,
पंख मै फड़फड़ाई थी।

जमाने भर मे कटुता थी,
तेरी बाते बस मिश्री सी।
कि रब ने गोद मे दिया,
मुझे एक फूल सी बेटी।

मै भी खिलखिलाती थी,
तेरी खिलखिलाहट से।
मेरे जख़्मो का मरहम,
बस,तेरी मुस्कराहट थी।

तू गीता सी पावन थी,
तू चंचल कृष्ण के जैसी।
तू भावो मे परम ज्ञानी,
मै संशयलिप्त अर्जुन सी।

मै टूटी हुई मूरत थी,तूने है फिर संवारा।
तूने है जान डाली मुझमे,
मै जिंदा लाश जैसी थी ।

न चाहत थी न मंजिल थी,
बस थी एक टूटता तारा।
तुझे देखा तो बनके चाँद,
फिर मै मुस्कराई थी।

विभा श्रीवास्तव 'विभांजलि
गोण्डा - उत्तर प्रदेश'

ग़ज़ल

ज़ीस्त देती है अगर ग़म तो न हारे जाएँ
तड़्क़ाबा से ही सभी ख़ुद को सँवारे जाएँ

छोड़कर तू ही गया हमको भँवर में बेबस
पार ऐ दोस्त बता किसके सहारे जाएँ

हौले हौले से इन्हें लाना ज़मीं पर ए दिल
ख़्वाब बेवक़्त ही पलकों में न मारे जाएँ

दिल की हस्ती को नहीं नोट बनाकर रक्खें
आप हरदम ही इसे सब पे न वारे जाएँ

दस्त में रहता है सच का ही जो तेरे परचम
कैसे आख़िर तेरे दामन से शरारे जाएँ

धँस चुके हैं जो अना के ही घने दलदल में
फिर भला कैसे कहाँ तक वो उबारे जाएँ

कर दी ताक़ीद हिफ़ाज़त से सदा दिल रक्खें
दिल की चोरी हुई तो हम न पुकारे जाएँ

गर क़दम रब का पड़े दर पे किसी दिन मेरे
जाग 'अनु' सारे मुक़द्दर के सितारे जाएँ

अनीता सिंह 'अनु'

मातृशक्ति अब जाग तू

मातृशक्ति अब जाग तू, भर ले मन में जोश।
बढ़े दुशासन हाथ हैं, मत रहना खामोश।।
चीर-हरण की ताक में, बैठे कितने व्याल।
उठा खड्ग संहार कर,
बन जा उनका काल।।
करते सब बस शोर हैं, बढ़ता आगे कौन।
नहीं छोड़ दुशासन को, भले सभा है मौन।।
कोसे जो सरकार को, रहते हैं वे चुपचाप।
नहीं आएँगे कृष्ण अब, कर भू को निष्पाप।।

मसले जो नन्ही कली, उनका कर संहार।
कर खुद ही शंखनाद अब, करना उन्हें
शिकार।।
बन बेटी की ढाल तू, मत घबराना आज।
अतुलित बल है भीम-सा, दृष्टि हुई है
बाज।।

लेना खुद संकल्प है, संकट है घनघोर।
कुरुक्षेत्र मन में सजा, बनती तभी कठोर।।
रूप द्रौपदी का धरा, देखा कन्या हाल।
हुई क्रोध से लाल है, खुले हुए हैं बाल।।

मत प्रभु की दरकार कर,
समय बहुत विकराल।
छलनी जब हो कोख तो, ले आना भूचाल।।
नहीं अर्चि तू डर कभी, रच देना इतिहास।
भरना सभी हुँकार अब, माँ रहती है पास।।

अर्चना कोहली 'अर्चि'
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

'अवनि' से जाने के बाद

'अवनि' से जाने के बाद
किताबों में लिखे होगें
कुछ मेरे मन के अल्फ़ाज़
और कुछ बन जाएँगें
हर इक़ दिल की आवाज

जब पढ़ोगे मेरे शब्दों को
और महसूस कर लोगे
उस पल लब मुस्कुराएँगें
तो कभी आँखें होगी नम

कुछ दिल धड़का जाएँगें
कुछ मरहम लगा देंगें
ज़ख़्म कुछ हरे होंगें
अनमोल शब्दों के मोती
कुछ -कुछ सहला जाएँगें

चूम कर माथा तुम्हारा
गोदी में सलाएँगें
कभी याद आएँगें
बिछड़े कोई अपने
जिन्हें खोया था कभी
जो हो न सके अपने

कुछ बिसरी हुई बातें
झुलसा ही जाएँगी
बेताबियाँ बढ़ाएँगीं
जब दिल से समझोगे तुम

कुछ शब्द हंसाएँगें
रूला कुछ जाएँगें
कुछ मोहब्बत जगाएँगें
कुरेद कुछ जाएँगें

डायरी के हर सफ़हों पर
कोई तो नज़र आएगा
इक़ प्यारा सा चेहरा
जो भुला ना पाओगे

जब लाल सुर्ख पत्तियाँ
उड़ेगीं किताबों से
मंज़र महक़ उठेगा
बीते कसमों वादों से

यादें सुलग जाएँगीं
कसक बेहद बढ़ाएँगीं
पढ़कर इन शब्दों में
कुछ पल तो जी जाओगे

दिल को छुएँगें कुछ लफ़्ज़
हमें भी याद कर लोगे
अनकही वो दास्तां
शायद पूरा कर लोगे

किताबों में लिखे होंगें
मेरे मन के कुछ अल्फ़ाज़
अवनि से जाने के बाद
और कुछ बन जाएँगें
हर इक़ दिल की आवाज

- अवंतिका विशाल'अवि'

मगन हो गई हूँ

धरा और गगन के फैलाव में खो गई हूँ,
स्वयं ही स्वयं में मगन हो गई हूँ।

1- निकलकर क्षितिज के गलियारों से।
सजाकर मन को सुघड़ विचारों से।
भूलकर सारी बातें मगन हो गई हूँ।
स्वयं.....

2- दुनियाँ कहेगी क्या
कहने दो उसको
जहाँ तक नदी जाय
बहने दो उसको
चंचल पवन बन मगन

कविताएं

हो गई हूँ।
स्वयं ही.....

3-सभी दुनियादारी निभा ली हैं मैंने।
देखी हैं सीमाएं
रिश्ते नातों की मैंने
परे रख के सीमाएं।
मगन हो गई हूँ।
स्वयं ही.....

4- सजा मन के गीतों की सुंदर रंगोली।
स्वयं ही मनाऊँ
दीवाली होली।
जज्बात का एक चमन हो गई हूँ ।
स्वयं ही .....

प्रवीणा त्रिवेदी प्रज्ञा
नई दिल्ली

कब मिलेगा न्याय?(निर्भया)

न्याय, मानवाधिकार!
मुझे चिढ़ होने लगी है इन शब्दोंसे
न्याय क्या है?
वकिलों की एक लंबी चौड़ी प्रक्रिया?
या काबिलियत की प्रतियोगिता?
या बैंक बैलेंस बढ़ाने का आसान तरिका?
न्याय फरियादी के लिए
सिर्फ उत्कण्ठा बनकर रह जाता है,
और दोनो वकिलों के लिए ट्रॉफी
'न्याय का ट्रॉफी'
चाहे उजाला जीते या अंधेरा
न्याय का ट्रॉफी उसीका
ऐसे ही खिलाड़ी मानवाधिकार का हवाला देता है
और दरिंदों की पैरवी करते हैं
क्या उनकी नजरको स्वार्थ
और लालचने इतना कमजोर कर दिया
कि ये मानव और दानव की पहचान कर नहीं पाते?
या नारीको ये मानव जातिमें नहीं गिनते?
हम पुछते हैं,किस अधिकार से ये नारीको
मानव जाति से अलग कर सकते हैं?

गीता लिम्बू

मुसाफिर

लम्बा सफर काट लिया
अब थोड़ा ही बाकी है ।
जाना है किसी और नगर
फिर मन में क्यों उदासी है।
उस नगर भी है भाई बन्धु
वहाँ भी तुझे प्यार मिलेगा ।
छूट गया जो इस जहाँ से
वही तुझको साथ मिलेगा।
क्यों घबराता तू ए बन्दे
क्यों मोह माया में फँस गया।
दो दिन का ही तो खेला था
क्यों इस मेले में धस गया ।
उठ जाग मुसाफिर सुबह हुई
कर्मों की गठरी सम्भाल जरा ।
ले चल अपने साथ वहाँ
जिसका हिसाब होगा जहाँ।।

दया शर्मा
शिलांग

कहमुकरी

सूरदास के राजदुलारे
मीरा के हो प्रियतम प्यारे
करते हो सब पर सम्मोहन
क्या सखि साजन? ना सखि मोहन।

जब देखे तो मन मुस्काए
मेहमानों को खूब भाए
सब लोगो की बढ़ाता शान
क्या सखि साजन? नहीं सखि पान।

जो हैं सब जन-जन के प्यारे
सदा चूमूँ चरणन तिहारे
पथ निहारूँ आओ अब धाम
क्या सखि साजन? नहीं सखि श्याम।

मेरे मन को वह है भाता
लगन और अनुराग जगाता
भुला देता सब मन की व्यथा
क्या सखि साजन? नहीं सखि कथा।

सबको असली रूप दिखाता
सब हँसते, वह भी हँसता
सुन्दरता है जिस पर अर्पण
क्या सखि साजन? ना सखि दर्पण।

डॉ अनीता पंडा 'अन्वी'

मेरी बात

कौन अपना कौन पराया,
बेगाना है, हर कई यहां
लोग कहते अपनों का
बाजार गरम है,
पर यहां तो सब अकेले खड़े हैं।
रिश्ते बनाने की कोशिश में
जिम्मेदारियों के बोझ तले
दब कर सब रह गए हैं ।
रिश्ते यहां खरीदा बेचा
जा सकता है,
लाख सही कर लो,
पर एक गलती पर
लाखों बातें आपको
सुनाई जाती है ।
अपनों के वेश में,
यहाँ बेगानों के भीड़ जमा हैं ।
वहाँ कौन अपना,
ओर कौन पराया।
बदली हुई इस दुनिया में,
आपको भी बदलना क्या जरूरी है?
खामोशी को जहाँ सब कुछ की
जवाब समझी जाती थी।,
वही आजकल बड़बोलेपन का
जमाना खूब गरम है।
जहाँ लोगों के दिलों में
घर हुआ करते थे ,
अब सब के दिल विरान हैं।
स्वार्थ के होड़ में,
सब प्रतियोगिताओं में व्यस्त हैं,
और यहाँ रिश्तों के बाजार में
रिश्ते खरीदे बेचे जा रहे है।
मुस्कराहट के पीछे ,
गम छिपाए रखना यो ही जरूरी है।
किसे कहे की बात
यहाँ तो सारे बेगाने हैं।

मल्लिका दे विष्णु

खुद से रूबरू होना

खुद को जब बारीकी से समझने लग जाओ तो,
समझो थोड़ा जीना आ गया।
रूठना और मनाने की वजह जब
दूसरों की जानने लग जाओ तो,
समझो इंसान को जानना आ गया।
हां, अब थोड़ा जीना आ गया।
जब कभी घोर अंधेरों में या घोर मुसीबतों मे,
मन के भीतर उम्मीद की एक हल्की सी ज्योति जलती
रहे, तो समझो गहरे अंधेरों
और मुसीबत को हराना आ गया,
हां, अब थोड़ा सा जीना आ गया।
भीड़, महफिल या चक्रचौथ की दुनिया
बुझी और तन्हा सी लगने लगे तो,
समझो एकांत में मस्त होकर जीने का
खजाना मिल गया,
हां, अब थोड़ा सा जीना आ गया।
किताबी दुनिया से अलग और
जब अनुभव का ज्ञान गहरा होने लगे,
तो समझो जीवन के हकीकत से रूबरू होना आ गया,
अपनों से मिली तकलीफों और आंसुओं को भूलकर जब
आगे बढ़ने लग जाओ ,
तो समझो समर्पण और संयम करना आ गया,
हां, अब शायद थोड़ा सा जीना आ गया ।।

विद्या मिश्रा
शिलांग, मेघालय

बरगद की व्यथा

गांव का पुराना एक बरगद हूं मैं,
मात्र पेड़ नहीं, वर्षों के तजुर्बे लिए,
गांव का बुजुर्ग हूं मैं।
हर खुशी और गम में शामिल,
सबके साथ हंसता और रोता,
बिना किसी आशा, अपेक्षा से,
हरदम ठंडी छांव देता।
शादी ब्याह की बारात मेरे नीचे से रवाना होती,
मैयत में जानेवालों की टोली भी यहीं इकट्ठी
होती।
पारिवारिक हो या बंटवारे की समस्याएं,
मेरी चौपाल पर बैठ सुलझाई जाती,
सांझ ढलते ही बच्चों बूढ़ों की टोलियां,
यहीं आकर अड्डा जमाती।
ताश के कई दौर देखे हैं मैंने,
बच्चों की लुका छिपी का भी गवाह हूं,
कितने परिंदों का नीड़,
कितने राहगीरों की आरामगाह हूं।
सावन माह मुझे खूब भाता,
बारिश की बूंदों से भीगे,
हवा में पत्तों की सरसराहट सुन,
मुझे बहुत सुकून आता।
न किसी से कुछ मांगा कभी,
न कोई दुख दिया,
अनगिनत यादों को संजोए,
हरदम खड़ा, हरभरा रहा।
काट मेरे अंग घाव तुम देते रहे,
देता था जीवनदान मैं,
प्राण तुम लेते रहे।
पर अब मैं दोबारा कुछ न कह पाऊंगा,
कुछ दिन बाद मैं भी नज़र नहीं आऊंगा।
जल्द ही आपके गाडियों की आवाजाही की खातिर,
तैयार है सड़कों के जाल बिछने को,
और मैं भी, जल्द ही,
तुम्हारी सहूलियत खातिर,
कटवा दिया जाऊंगा।
सुनाना मेरे किस्से,
आने वाली पीढ़ियों को,
होता था एक बड़ा सा बरगद गांव में कभी,
कटवा दिया आधुनिकरण की खातिर जो।

नीता शर्मा
शिलांग, मेघालय

ग़ज़ल

बतलाएं तुम्हें क्या के यहाँ क्या नहीं होता।
किस रोज़ यहाँ कोई तमाशा नहीं होता।।

शिकवा जो किया मैंने तो शोर उड्डा जहाँ में।
डवो क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नही होताङ

दुख दर्द दिए तूने वो सब सह लिये मैंने।
दुख दर्द के मारो का सहारा नही होता।।

कुछ खेल अलग चलता है इस पर्दे के पीछे।
हम जैसा समझते हैं वो वैसा नहीं होता।।

ज़ीनत है चमन की यहाँ बस उनके सबब से।
हैं ऐसे शजर जिनका के साया नहीं होता।।

ग़ैरों की शिकायत से भला फ़ाएदा क्या है।
आ जाए बुरा वक़्त तो बेटा नहीं होता।।

बनता है कोई काम बिगड़ ता है कोई काम।।
होता है 'अज़ीज़' ऐसा तो वैसा नहीं होता।

अफरोज अजीज

पिता है वह वृक्ष घनेरे

पिता है वह वृक्ष घनेरे
दूर करता जीवन के अंधेरे
बच्चों का देता सब हरदम साथ
जीवन के आयाम बहुत तेरे

दुख अपने भीतर सहकर भी
कभी-कभी भूखे रहकर भी
अपने बच्चों का जीवन संवारता
करता मांग पूरी हंस-हंसकर

उसके चप्पल घिसे हुए पर
बच्चों की खुशियों से जी भर
पूरी करता सबकी कामना
विषम परिस्थिति में भी सजाता घर

देना तुम उनको हरदम मान
करना हमेशा ही सम्मान
जिसके सिर पर पिता का आशीष
आगे उसके सभी झुकाते शीष

एडवोकेट अंजु भारती

गीत

देख तेरे इस देश की हालत क्या हो गई भगवान
की इसमें कम ही में ईमान हजारों लाखों बेईमान

पैसा लड़की और शराब बस इसके तीन ठिकान
कि हो गया कैसा हिंदुस्तान मेरे आजाद का हिंदुस्तान

बेटी की उम्र की लड़की खरीदी अस्मत लूट के कोठे बेची
इंसानियत से क्या लेना इसको ये तो बना जल्लाद
कि ये तो बना सबका खरीददार

मंदिर से मूरत को चुराते उनके जेवर भी बेच आते
ईश्वर को ही बेच के बनते ख्याति प्राप्त खरीददार
मेरे आजाद का

जानवरों की तस्करी करते अंग उनके बेचते फिरते
और बताते स्वयं को अपने देश का नागरिक जिम्मेदार
कि ये तो बना सबका खरीददार
फिर भी इसका दिल ना भरा तो बेच दी नन्ही नन्ही जाने
उनको बलि चढ़ाकर देते ईश्वर को सौगात
कि ये तो बना सबका खरीददार

शुभा शुक्ला निशा

खुशी का आलम (कविता-2)

मेरी खुशी का आलम देखो तो
प्रेम की रागनी बज रही देखो तो।

नई धुन बजे हर एक एक ताल पर
कुछ नया आज जमी आसमाँ पर ।

खनक उठी चूड़िया थिरक उठे कंगना
प्रेम की खूशबू से महक उठा अंगना।

जब से ओढ ली है मैंने लाल चुनरिया
तब से ही तुम्हारी हो गई सांवरिया ।

एक तुम्हारे आने से अरमान मिल गया
लगता मानो स्वर्ग धरा पर ही मिल गया।

हर पल हर लम्हा का है अद्भुत आगम
हंसी -खुशी- उमंगो का है सुंदर संगम

विशाल हृदय में प्रेम की गहराई देखो तो
मन में हमारे खुशियों का आलम देखो तो।

डॉ सीमा निगम
रायपुर

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक

स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332

Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

पुरुष काव्य गोष्ठी

कहते नहीं धूप

अनुभव के आधार पर,कहने लगे दरख़्त।
मौसम ने करवट लिया,लगा बदलने वक़्त।

हो दरख़्त की रुखसती,या फिर मधुर बयार।
चलती सबकी ज़िन्दगी,मौसम के अनुसार। ।

सूखे एक दरख़्त ने,कही बात बिन्दास ।
अपने होते पास में,मौसम होता खास।।

नए आधुनिक दौर का,अद्भुत है संसार।
पैसों के खातिर जहाँ,हुआ प्यार व्यापार। ।

चमक-दमक की छाँव में,रहा न उनको याद।
अपने भूखे सो गए, बिना किये संवाद। ।

समझ-बूझ कर लीजिए, जाँच-परख कर ज्ञान।
साधु सभी सच्चे नहीं,वाचक नहीं महान। ।

दुनिया की यह रीत है,कहते मियाँ हनीफ।
ज़िन्दा की निन्दा करें,मुर्दा की तारीफ़।।

मंदिर-मस्जिद से परे,है रोटी का धर्म।
भूख कहानी लिख रही,घूँट-घूँट पी शर्म।।

एक बिन्दू पर आ मिले,मज़हब-धर्म लकीर।
भूख,मौन हो खींचती,रोटी की तस्वीर। ।

डॉ0प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

चलो रिश्तों को संजो कर रखते है

चलो रिश्तों को संजो कर रखते है,
एक दूसरे से कुछ मतलब रखते है।

खून है अपना, जो आया है दूर से,
अपनी रोटी उससे दूर ही रखते है।

है अज़ीज हमको हमारे माता पिता,
चलो उनको बृद्धाश्रम में रखते है।

अजीज़ था अपना,चला गया दूर,
दुश्मनी तो हम आज भी रखते है।

तेरे जाने के बाद याद करूँ तुझको,
यह ख़्वाब तो अब बेमानी लगते हैं।

है ऐसा, दुनिया का दस्तूर-ए-इनायत 'संजय'
इंसानियत से हम अक्सर दूर ही रहते है।

संजय सक्सेना
प्रयागराज।

धरा में तुम हो

धरा में तुम हो गगन में भी हो।
हो नीर पावक पवन में भी हो।।
सकल चराचर में हो समाये।
विटप लता और सुमन में भी हो।।
धरा में तुम हो गगन में भी हो।
हो नीर पावक पवन में भी हो।।

तुम आदि हो और अनंत भी हो।
दिशाओं में हो दिगंत भी हो।।
है सृष्टि सारी कृपा तुम्हारी।
विनाश में हो सृजन में भी हो।।
धरा में तुम हो गगन में भी हो।
हो नीर पावक पवन में भी हो।।

सशक्त में हो असक्त में हो।
गृहस्थ में हो विरक्त में हो।।
विरागियों के और योगियो के।
हो ध्यान पूजा नमन में भी हो।।
धरा में तुम हो गगन में भी हो।
हो नीर पावक पवन में भी हो।।

अनेक में एक रूप हो तुम।
अकथ अलौकिक अनूप हो तुम।।
हो राम समरस सजीव जड़ में।
और शम्भु मन के सदन में भी हो।।
धरा में तुम हो गगन में भी हो।
हो नीर पावक पवन में भी हो।।

शम्भूनाथ श्रीवास्तव

माँ

माँ शब्द है माँ प्राण है, माँ बालकों की जान है।
माँ गेह है माँ मोद है, माँ हम सभी की आन है।।
हम बोलते हैं शब्द माँ, के भाव मन की जान है।
माँ देवता है इस धरा, में प्रीत की पहचान है।।1।।

माँ जो कहे बोलो वही, माता धरा की शान है।
माँ ने दिया है जन्म जन, को आपकी सुधि मान है।।
हम मात तेरी याद में तन, मन बिछाएँ हैं सदा।
तुम सत्य मेरा बोध मन, का जीव जीवन सर्वदा।।2।।

उपवास करके बालकों, का ध्यान तुम धरती रही।
वंदन तुम्हारा जो करे, आशीष मन भरती रही।।
तुम रागिनी हो बालमन, की ज्योति सम जलती रही।
हर भावना के बीज मन, में तुम सतत भरती रही।।3।।

माधुर्य है जो इस चमन की, माँ की करूँ आराधना।
माँ दे रही है साँस जन को, माता तुम्हारी वंदना।।
सर्वस्व हो तुम इस धरा पर, जो इसे है मानता।
सच माँ तुम्हारे भाव में वह, सच जगत पहचानता।।4।।

शिव के लिए जो मात बनकर, गा रही थी गीत वो।
थी शक्ति वह माँ की अनोखी, बन गयी सच मीत वो।।
आराध्य है वह इस धरा पर, मात जिसका नाम है।
दैवीय उसका बोध शिशु को, पालना ही काम है।।5।।

हरिगीतिका की धुन सरीखी, सप्त सुर में बोलती।
शिशुपान नितप्रति तुम कराती, पट हृदय के खोलती।।
माँ सिन्धु से गहरी हमेशा, भाल हो आकाश का।
ऊँचा शिखर कोई नहीं हैं, मात के उच्छ्वास सा।।6।।

यम के नियम को तोड़ देती, जोश से भरपूर हो।
माँ मोदती है भाव भरकर, माँ सही तुम नूर हो।।
वंदन करें हिय में धरें माँ, आप मेरी शक्ति हो।
लेखन करूँ तुम को वरूँ माँ, जोश मेरी भक्ति हो।।7।।

पंडित राकेश मालवीय मुस्कान
प्रयागराज

सीख

कभी रुक कर या तो फिर झुक के चलो,
कभी चल न सको तो जरा रुक जाना।
यह जीत नहीं तो फिर हार नहीं,
ये तो समय -समय का नजराना।

कभी नाव फंसे मझधार ही में,
कभी धार लगावत नाव किनारे।
कहीं राह बिना तो दिखे ठौर नहीं,
कहीं राही चले बस ठौर सहारे।

मिला वक्त कभी तो किया कर्म नहीं,
सत्संग जहां तो तुम संग न आए।
तब जंग की बात पे भागि चले।
अब जंग लगी तो फिर क्यूं पछताए।

जब वृक्ष की साख न स्वस्थ दिखे,
तब स्वच्छ बयार कहां से मिले।
उस देश की साख समझ के परे,
जहां साख ही दीमक खात मिले।

देवी प्रसाद पाण्डेय
प्रयागराज

मेरे मन तू मेरी बात समझ

मेरे मन तू मेरी बात समझ ,
जीवन के दिन वो बीत गए।
अब कौन सुनेगा तेरी व्यथा,
तेरे अपने पुराने मीत गए।।

तेरी व्याकुलता सब जानेंगे
तुझे अपने नहीं पहचानेंगे।
तू भी अपनों से हारा था
ये लोग भला कब मानेंगे ।।

अब इतना भरोसा कैसे करें
जीवन के दिन वो बीत गए।

कुछ भी कहना बेकार यहां
मन के भावों में सार कहां
जो प्रेम करे बंधन ना बने
हिय में इतना विस्तार कहां

अब कितनो पर उपकार करें
जीवन के दिन वो बीत गए

मेरे मन तू मेरी बात समझ
जीवन के दिन वो बीत गए

ये माया तेरी बंधन ना बने
ये ममता तेरी क्रंदन ना बने
जीवन तो विधाता दे ही चुका
निर्वान तेरा जग वंदन बने

यह नैया पार करें कैसे
जीवन के दिन वो बीत गए

मेरे मन तू मेरी बात समझ ,
जीवन के दिन वह बीत गए
अब कौन सुनेगा तेरी व्यथा,
तेरे अपने पुराने मीत गए।।

राहुल पवार

गीत

मानस के सागर में तिरते स्वप्निल नव जीवन,
नींद चुरा अनगीन रातों का ब्यास मापता मन
आशा का विहान अलसाया सुख की किरने धुमिलाई,
रूठ चला आंचल का टुकड़ा पगली पीर पिघल आई,
ममता से अनछुआ रह गया छला गया बचपन।
बरगद की बूढ़ी आंखों में समा गई सिमटी छाया,
कट गईं बांहे हरियाली की पत्ता पत्ता मुरझाया,
बची खुची सांसें प्राणो में करती स्पंदन।
आपस की तन गई डोरियां पहचाने अनजान हुए,
गांव शहर के मीत सयाने बारूदी वरदान हुए,
मद्धिम हुआ जागरण जग का सोया वृंदावन।
क्या अतीत के गौरव आकर फिर इतिहास बनायेगे,
वर्तमान के दोहरे चेहरे का परिहास मिटाएंगे,
देशी सुधियो में जानें कब होगी प्रीत सघन।

राजेश सिंह राज

गजल

हास-परिहास का जीवन में उपवास मत कीजिये,
सोंच समझ कर कभी भी बकवास मत कीजिये।।
याद रहे आपके विचार ही आपको अपना बनायेंगे,
यूँ किसी के विचार से मन को निराश मत कीजिये।

उदासी की दुकान बनने से अच्छा है उदार हो जाइये,
भान रहे भूलकर भी किसी को उदास मत कीजिये।।
गली-गली,मोड़-मोड़ चल रही देखो ज्ञान की दुकान है,
जो ज्ञान न बढ़ाये मान उसपर विश्वास मत कीजिये।।

सपनों के पंख में उड़ान को ध्यान हरदम ही दीजिये,
यूँ टूटने के डर से सपनों को कारावास मत दीजिये।।
भाव के विचार की अभिव्यक्ति सहज-सरल रहे सदा,
उदण्डता से स्वयं का कभी भी विनाश मत कीजिये।।

दूर द्वन्द कीजिये आप ही, सदा दिल के विचार का,
विपरीत दो विचारों का कभी सहवास मत कीजिए।।
ज़िंदगी में सपनें हैं, सपनों सी ज़िंदगी हो, चाहिए तो
खुद को कभी परिस्थितियों का दास मत कीजिये।।

अजय वर्मा 'साथी'
प्रयागराज, उत्तर-प्रदेश

सुमन ढींगरा दुग्गल को मिला महिला श्री साहित्य साधना सम्मान 2024

21 कवयित्रियाँ भी नवाजी गईं शहर समता गौरव सम्मान से

प्रयागराज । 25 जुलाई को शहर समता के सभागार में एक अलंकरण समारोह में सुमन ढींगरा दुग्गल को महिला श्री साहित्य साधना सम्मान 2024 से सम्मानित किया गया।
वरिष्ठ कवयित्री सुमन दुग्गल ढींगरा को सम्मान देने से पूर्व शहर समता विशेषांक का लोकार्पण किया गया। इसका संपादकीय वाचन शहर समता के संपादक व कवि, लेखक उमेश श्रीवास्तव ने किया। तत्पश्चात सुमन ढींगरा दुग्गल को शाल ओढ़ाकर, प्रशस्तिपत्र और इक्यावन सौ रुपए नकद प्रदान किया गया।
इस सम्मान समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ रचनाकार श्रीप्रकाश मिश्र ने की। मुख्य अतिथि डॉक्टर राम जी मिश्र रहे। विशिष्ट अतिथि रही कवयित्री प्रेमा राय, डाक्टर ऊषा मिश्रा तथा प्रोफेसर सरोज सिंह रहीं।
इस सम्मान समारोह में शहर समता महिल
ा काव्यगोष्ठी की चयनित 21 पदाधिकारियों को शहर समता गौरव सम्मान से भी सम्मानित किया गया, जिसमें अर्चना चौहान उ0प्र0, शोभा त्रिपाठी छत्तीसगढ़,उमा मिश्रा प्रीति म0प्र0, नीता शर्मा शिल
ांग इकाई मेघालय, अफरोज अजीज दिल्ली इकाई दिल्ली, आनोवारा खातुन विश्वनाथ इकाई असम,

रंजना बिनानी तिनसुकिया गोलाघाट इकाई असम, अंजू भारती बिहार, यामा शर्मा महासचिव देहरादून इकाई उत्तराखंड, साधना शुक्ला भोपाल इकाई मध्य प्रदेश,अनीता दूबे जबलपुर इकाई मध्य प्रदेश,सीमा वर्णिका कानपुर इकाई उत्तर प्रदेश, प्रवीणा त्रिवेदी नोएडा इकाई उत्तर प्रदेश, आकाँक्षा पाल प्रयागराज इकाई उत्तर प्रदेश, विभा श्रीवास्तव गोंडा इकाई उत्तर प्रदेश, रितु बाला रस्तोगी, बिजनौर इकाई उत्तर प्रदेश, श्रद्धा कश्यप धम्तरी इकाई छत्तीसगढ़, संगीता बनाफर बिलासपुर छत्तीसगढ़, रीना प्रदीप कुमार हैदराबाद कें नाम उल्लेखनीय हैं।
इस अवसर पर शहर समता संपादक उमेश श्रीवास्तव के अतिरिक्त शहर समता महिला काव्य गोष्ठी की राष्ट्रीय अध्यक्षा रचना, पंडित राकेश मालवीय मुस्कान, शम्भुनाथ श्रीवास्तव, प्रकाशक रंजन पांडेय, शाहीन खुशबू, पुरुष काव्य गोष्ठी के अध्यक्ष राजेश कुमार सिंह राज, अनामिका तिवारी, अशोक कुमार श्रीवास्तव कुमुद, देवी प्रसाद पाण्डेय, डाक्टर मंजू प्रकाश, मिली श्रीवास्तव, निखिलेश मालवीय, चेतना चितेरी आदि ने काव्यपाठ किया। धन्यवाद ज्ञापन स्नेह सुधा ने किया।